मूल्य रु. ५-०० मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक १९९ • फरवरी -२०२४

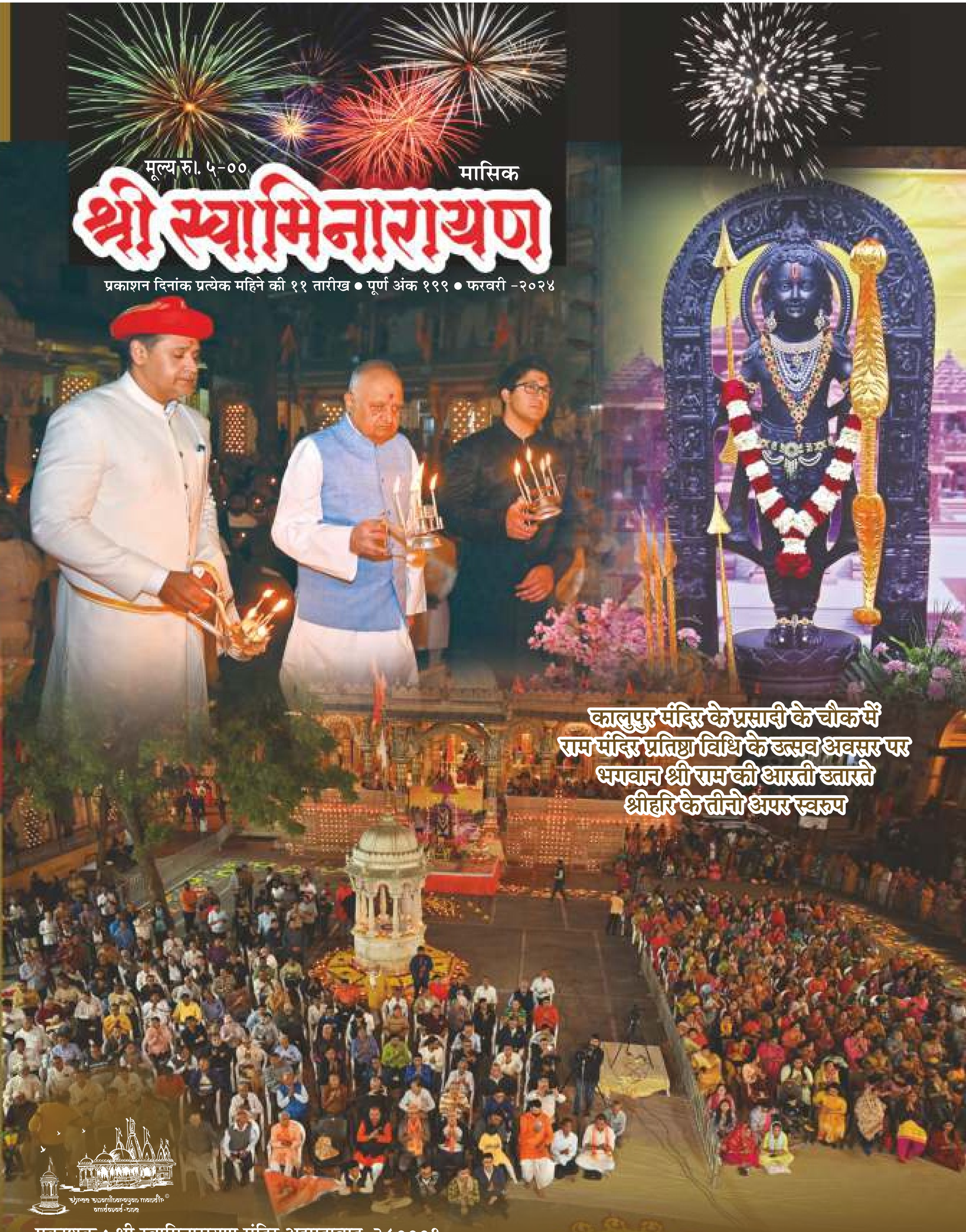

कालुपुर मंदिर के प्रसादी के चौक में
राम मंदिर प्रतिष्ठा विधि के उत्सव अवसर पर
भगवान श्री राम की आरती उतारते
श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.
Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के संयुक्त शाकोत्सव की आमंत्रण पत्रिका श्री नरनारायणदेव समक्ष लिखते प.पू. बड़े महाराजश्री । साथ में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी तथा अहमदाबाद देश के अग्रणी संतो-महंतो ।

लीलापुर (चंद्रगढ) गाँव में नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

मोटेरा मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

शियाणी (झालावाड) गाँव में सभा को आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

(कुहा) (दशक्रोई) गाँव में पाटोत्सव के अवसर पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महारजाश्री ।

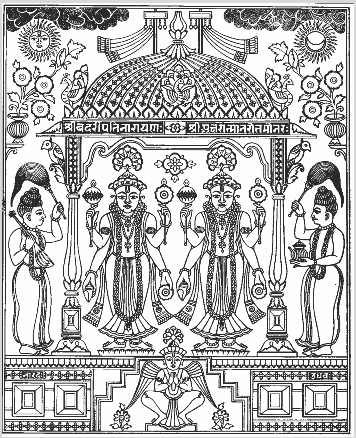

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(महंत स्वामी)

मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ९३१३७०६०९५

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail : magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १७ ● अंक : १९१ ● फरवरी-२०२४

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. श्रीहरि प्रस्थापित नव मंदिरो में से पंचम मंदिर जेतलपुरधाम ०६

०४. धनुर्मास – सफला एकादशी पदयात्रा आशीर्वचन ०८

०५. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १०

०६. भक्ति सुधा १५

०७. सत्संग समाचार १७

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो ! शांत चित्त से जीवन देखने योग्य है । ध्यान से देखने पर ऐसा पता चलता है कि हम लोगो का जीवन ईच्छाओ, महत्वकांक्षाओ और अपेक्षा से भरा हुआ है । यदि यह दूर हो जाये तो संकल्प-विकल्प सभी समाप्त हो जाये तो आत्मदर्शन होता है ।

मृत्यु का आगमन कब हो जाये । यह निश्चित नही है । वह कभी भी आ सकती है । इसके बाद क्या ? भगवान का नाम ले लेता है । मेरे भाई ! सुख-दुख के दाता स्वामिनारायण भगवान है । इसके अलावा कोई कर्ता-धर्ता नही है । यह विचार करके मन मे से गंदे विचार दूर करके विचार शुद्ध कर लेना चाहिए ।

उत्सव-समैया और शाकोत्सव जेसे अवसरो को याद करके जीवन जीने की कला आ जाये । तो अपना बेडा पार हो जायेगा । वचनामृत शिक्षापत्री हमारे मार्गदर्शक है । यह केवल पढ लेने तक ही नही है । उसे लागू भी करना है । प्रतिदिन हमे परीक्षण करना चाहिए । अपनी स्थिति का आकलन करते रहना चाहिए । हम सभी संतो एवम् हरिभक्तो को भगवान को खुशी के लिये भगवान की भक्ति करना है । सभी को हमारा प्रेमपूर्वक जय श्री स्वामिनारायण ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (जनवरी-२०२४)

६ ईश्वरपुरा (बदपुरा) गाँव में कथा पारायण के अवसर पर पधारना ।

७ एकादशी को धनुर्मास धून के अवसर पर अहमदाबाद देश के शहेर और शहर के बाहरी क्षेत्र के हरिभक्तो के पदयात्रा के निमित्त कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पर पधारना ।

१२ बालवा गाँव में पारायण-शाकोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धनुर्मास धून की पूर्णाहुति अपने करकमलो द्वारा किये तथा श्री श्री नरनारायणदेव के सन्मुख श्रीराम जन्म भूमि आमंत्रण पत्रिका विश्व हिन्दु परिषद और आर.एस.एस. के कार्यकर्ताओने प.पू. महाराजश्री को अर्पण किये ।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर लीलापुर गाँव में (ता. लखतर) (मूली प्रदेश) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने कर कमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२० श्री स्वामिनारायण नूतन मंदिर मानसर गाँव में (ता. हलवद-मूली प्रदेश) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने कर कमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद द्वारा आयोजीत श्रीराम जन्म भूमि प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में भजन-कीर्तन-संध्या के समय पूर्णाहुति की आरती अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सत्संग सभा में पधारना ।

२८ श्री नरनारायणदेव देशना संयुक्त शाकोत्सव अपने सानिध्य में ''पर्व'' ग्राउन्ड मे मनाया गया ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जनवरी-२०२४)

७ एकादशी को धनुर्मास धून के अवसर पर अहमदाबाद देश के शहेर और शहर के बाहरी क्षेत्र के हरिभक्तो के पदयात्रा के निमित्त कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पर पधारना ।

१२ कुबडथल गाँव में शाकोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धनुर्मास धून की पूर्णाहुति अपने करकमलो द्वारा किये तथा श्री श्री नरनारायणदेव के सन्मुख श्रीराम जन्म भूमि आमंत्रण पत्रिका विश्व हिन्दु परिषद और आर.एस.एस. के कार्यकर्ताओने प.पू. महाराजश्री को अर्पण किये ।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद द्वारा आयोजीत श्रीराम जन्म भूमि प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में भजन-कीर्तन-संध्या के समय पूर्णाहुति की आरती अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सभा में पधारना ।

२८ श्री नरनारायणदेव देशना संयुक्त शाकोत्सव अपने सानिध्य में ''पर्व'' ग्राउन्ड मे मनाया गया ।

श्रीहरि प्रस्थापित नव मंदिरो में से पंचम मंदिर जेतलपुरधाम

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

भगवान श्री स्वामिनारायण इस पृथ्वी के उपर ४९ साल, २ महीने १ दिन तक रहे थे । इतने संक्षिप्त काल में श्रीहरिने नव मंदिरो का निर्माण करवाये थे । तथा उसमें देवो की स्थापना किये । इसमें से पंमच मंदिर जेतलपुरधाम शास्त्रोक्त प्रमाण मे एक प्रमाण है।

● स.गु. शतानंद स्वामी रचित श्रीमद् सत्संगीजीवन ग्रंथ प्रकरण-४, अध्याय-८०, श्लोक संख्या १ से ८

सुव्रत मुनि ने कहा : हे प्रतापसिंह राजन ! फाल्गुन वद पंचमी के दिन भोजनो परांत आनंदमुनि श्रीहरि महाप्रभुसे कहने लगे । हे प्रभु ! जेतलपुर में कृष्ण मंदिर तैयार हो गया है। यह निश्चित बात है । (१) हे राजन् ! इस आधार से आनंदमुनि द्वारा बोले जाने पर श्रीहरि प्रसन्न हो गये । तथा षष्टी के दिन प्रातः काल जेतलपुर आ गये । उस समय वहाँ के लोग श्रीहरि का स्वागत करने के लिये वाजिंत्रो के साथ गये थे । (२) अन्य दूसरे मंदिरो से अलग विलक्षण शोभायमान मंदिर देखकर संतुष्ट हुए । आनंदमुनि की प्रशंसा करने लगे । (४) इसके बाद महाप्रभुने उस मंदिर में अ.टमी के दिन ब्राह्मणो के द्वारा बताये गये मुहूर्त में रेवती सहित बलराम और हरिकृष्ण की स्वयं प्रतिष्ठा किये थे । (५)

कृष्णं रामं च रेवत्यासह तत्र ततो हरिः,
अष्टभ्यां ब्राह्मणैसकते मुहूर्तेऽस्थापयत्स्वयम्
(स.जी. ४/८/५)

पहले की तरह श्रीनगर में श्रीनरनारायणदेव प्रतिष्ठा के समय श्रीहरिने जैसा उतसव किये थे । वैसा ही उत्सव जेतलपुर धाम में भी किया गया था । (६)

● वचनामृत - जेतलपुर-२

संवत १८८२ में चैत्र सुद चतुर्थी के दिन स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाँव श्री जेतलपुर के मध्य सायं के समय श्री बलदेवजी मंदिर के चौक में ढोलिया बिछाये थे । उसके उपर विराजमान थे । सभी लोग श्वेत वस्त्र पहने थे ।

● स.गु. वासुदेवानंद वर्णी द्वारा रचित श्रीमद् सत्संगिभूषण (अंश-४, अध्याय-४२, श्लोक २६ से ३५)

श्री व्यापकेशमुनि कहते है कि – हे ज्येष्ठजीत राजन् ! श्रीहरि श्री नरनारायणदेव को नमस्कार करके घोडे पर सवार हो गये । आस्टोडिया दरवाजे से निकलकर चंडोला तालाब आये थे। वहाँ से असलाली पधारे थे । गाँव के समीप अम्बावाडिया में थोडी देर बैठे थे । जेतलपुर आशजीभाई आदि भक्त ढोल–नगारा लेकर आये थे । जेतलपुर आकर अपने नये मंदिर पर रहे थे ।

मंदिर का निरिक्षण किये थे । सभी मंदिरो से यह मंदिर सुंदर होने के कारण खुश हुए । आनंदमुनि की प्रशंसा किये । भूदेवो ने फाल्गुन वद आष्टमी का मुहुर्त का मुहूर्त दिये । उसी दिन रेवती बलदेव और हरिकृष्ण महाराज की उल्लासपूर्वक स्थापना किये । घी–शक्कर से बने लड्डु को हजारो ब्राह्मणो, संतो और अनेक भिक्षुओ को खिलाये तें ।

● स.गु. भूमानंद स्वामी रचित श्री घनश्याम लीलामृत सागर (तरंग-८०, कडी २९-३६)

–: चोपाई :–

ते समे आनंदानंद स्वामी, कहे श्रीहरिने करभामी ।
जेतलपुरे थयुं मंदिर, त्यां पधारोजी श्याम सुंदिर ॥२९॥
अष्टमीने दिने अति शुध्ध, ते विषे पधराव्या विबुध ।
मध्य मंदिरमां ततखेव, स्थाप्या रेवती ने बलदेव ॥३२॥
जोडे पोतानी मूर्ति सारी, तेनुं स्थापन कर्युं मुरारी ।
दक्षिण बाजु मंदिर विषे, राधाकृष्ण स्थाप्या छे ते विषे ॥३३॥
डाबी बाजुनुं मंदिर ज्यांय, सुखशय्या करी छे ते मांय ।

एम स्थापना करी मुरारी, पछे देवनी आरती उतारी ।।३४।।
वली पोतानुं तेज अपार, मूर्तिओमां मुक्यु तेणीवार ।
पूर्णाहुति करी छे त्यां प्रीते, विप्रोने जमाड्या रूडी रीते ।।३५।।

(तरंग-१०१, कडी-४०)

स्थाप्या जेतलपुर मोझार, रेवती बलदेव मुरार ।।४०।।

● स.गु. महानुभावानंद स्वामी रचित श्रीहरिकृष्ण लीलामृत (अध्याय-९९, श्लोक-३२ से ३६)

उसी समय पर जेतलपुर से आनंदानंद स्वामी आये थे । उनसे श्रीजी महाराज ने कहा जेतलपुर में मंदिर तैयार हो गया है । सर्व प्रथम वहाँ प्रतिष्ठा करके धोलेरा आये । तीन शिखरवाला मनोहर मंदिर देखकर खुस हुए । फाल्गुन वद अष्टमी के दिन विद्वान ब्राह्मणो द्वारा वेद मंत्रोच्चार, वैदिक विधि से मूर्तियो की प्राण प्रतिष्ठा करवाये थे ।

ततोऽष्टम्यादिने स्वामी समुहुर्तेह्यतीष्ठपत ।
रेवतीयुक्तराम च स्वमूर्तितत्र मंदिरे ।।३५।।

शुभ मुहूर्त में रेवती बलदेवजी और अपनी हरिकृष्ण नाम की मूर्ति स्थापना करके मूर्तियो की स्वयं आरती उतारे थे ।

● स.गु. प्रसादानंद स्वामी के ग्रन्थ श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृत (विश्राम-१०४)

(संक्षिप्त(असलाली गाँव से जेतलपुर आये । गाँव में से समैया आया । गाते-बजाते मंदिर पर पधारे । मंदिर देखकर खुश हुए । (देव और घुम्मट के मध्य जाली के अंदर के भाग मे) आकर विराजमान हुए । तत्पश्चात गंगा माँ और गाँव के सत्संगी बोले ''महाराज बोले गोपालानंद स्वामी और आनंद स्वामी को बुलाओ । वे लोग पैर छूकर खडे हो गये। तब महाराज बोले ''मंदिर धीरे-धीरे बनेगा मूर्ति को पधरा दे ।'' महाराजने भी कोली मे खडे मूर्तियो को मंदिर में स्थापना किये । उसका नाम रेवती, बलदेवजी और हरिकृष्णजी । इसके बाद वस्त्र, गहना फूल हार पहनाकर आरती उतारे । महाराज बोले कलश और ध्वजा कौन चढ़ा रहा है ? तब आशजीभाई ने गंगामाँ से बोले ''हम चढायेगे तथा एक हजार रुपये देगे'' ।

● स.गु. कृष्णानंद स्वामी रचित श्रीहरिचरित्रामृतम् (अध्याय-६२, कडी- १५-१८)

सुणो आनंद स्वामी सुजाण, पुर जेतलधाम प्रमाण ।।१५।।
करो मंदिर मोटु अपार, जाणे जकतमां सहु नरनार ।
राजी थई स्वामी गया पोते, कर्युं धाम भारे जग जोते ।।१६।।
नाथ जोई राजी थया मन, स्थाप्या देव थईने मगन ।
रेवती ने बलदेव नाम, जाणो सुवासी प्रतापराम ।।१७।।
त्रीजी मूर्ति पोतानी नाथ, हेते करी पधरावी हाथ ।
वेद शास्त्र प्रमाणे करीने, पधराव्या भाव भरीने ।।१८।।

● स.गु. वैष्णवानंद स्वामी रचित श्रीहरि लीलासिंधु (रत्न-१४, तरंग-४३)

(संक्षिप्त) जेतलपुर गाँव में सुंदर तीन मंजिल वाले भगवान का तीन मंजिल का देवल तैयार कराके । मंदिर बनाया गया । वेदोक्त विधि से सुंदर श्रीहरि की मूर्तियो को सिंहासन उपर विराजना कर प्रतिष्ठा किये । नर-नारी ने समूह में जय-जयकार किये थे । यह सुंदर जेतलपुर मंदिर में कराया गया था । उसमें प्रत्त्यक्ष देव को प्रतिष्ठित किया गया ।

श्री नरनारायणदेव का २०२ पाटोत्सव महोत्सव

समस्त सत्संग को सहर्ष बताना है कि आगामी फाल्गुन सुद-३ त्रीज ता. १२-३-२०२४ मंगलवार को अपने भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का २०२ का पाटोत्सव महोत्सव समस्त धर्मकुल के सानिध्य में और संत-हरिभक्तो की विशाल उपस्थिति में भव्यता से मनाया जायेगा । देश-विदेश के सभी हरिभक्त ऐसा महाअलौकिक पाटोत्सव दर्शन के लिये आएँ । यह हमारा विशेष निमंत्रण है ।
(महंत स्वामी - कालुपुर मंदिर, अहमदाबाद)

नये महंतश्री की नियुक्ति

माणसा : श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा के नये महंतश्री स.गु. स्वामी मुक्तस्वरुपदासजी गुरु सगु. स्वामी प्राणजीवनदासजी (मूलीवाले) को नियुक्त किया गया है।

लीम्बडी : श्री स्वामिनारायण मंदिर लीम्बडी के नये महंतश्री स.गु. शास्त्री स्वामी प्रेमवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी (मूलीवाले) को नियुक्त किया गया है।

बालवा गाँव में परम पूज्य लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद प्रेरणा से पारायण शाकोत्सव के अवसर पर अपने स्वामिनारायण अंक के ३३ आजीवन सदस्य बने है । जिस में प्रत्येक सदस्य को २०० रुपया सौजन्य सेवा श्री विष्णुभाई, श्री धीरजभाई, श्री रवि, श्री ईश्वरभाई और श्री भरतभाई ने किया था । प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी को अंतकरण पूर्वक आशीर्वाद दिये ।

धनुर्मास - सफला एकादशी पदयात्रा

आशीर्वचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

प.पू. लालजी महाराजश्री कालुपुर मंदिर ता. ०७-०१-२४ : आज के पवित्र एकादशी के दिन नरनारायणदेव के प्रांगण में हम आये तब से ही पैर रखने की जगह नही थी । इतने हरिभक्त जब नरनारायणदेव के दर्शन के लिये आये है । तो आशीर्वाद तो हमे देव का ही लेना है ।

भगवान के नाम स्मरण की कितनी महिमा है । कि कुछ भी दुःख तकलीफ हो यदि हम भगवान के सामने बैठकर नाम स्मरण से कष्ट दूर हो जाता है । नरनारायणदेव के सम्मुक बैठकर कुछ समय के लिये धुन करने से छोटे उम्र के बच्चे से वृध्द तक देव के प्रति लगाव रखे तो उनका चेहरा भगवान के बल से तेजोमय बनेगा । तो हम सभी आज के दिन प्रार्थना करे कि हमे भगवान अधिक शक्ति दे कि देव के प्रतिनिष्ठा अधिक बनी रहे यही नरनारायणदेव के चरणो में वंदना है ।

प.पू. महाराजश्री : पदयात्रा करके आये । इस मे से कौन नही करके आया है ? ये उपर जो बैठे है नही करके आये है । अब आप लोको का अवसर है ।

शास्त्रो में पदयात्राकी अधिक महिमा बताई गयी है । एक–एक कदम अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है ।आप को पुण्य प्राप्त होगा तो क्या करेगे ? यह भगवान मिले है । संत मिले है । हरिभक्त मिले है ।इससे अधिक क्या करना है लेकिन प्रयत्न जारी रखना है । महाराज कहे है । भगवान का महात्म्यज्ञान तथा वैराग्य सहित आत्मज्ञान दोनो का अतिशय दृढता रखना है । अपने बारे में पूर्ण रुप से समझना है । अब हमे कोई–न्यूनता नही रहे है । यह समझकर लगातार भगवान की भक्ति करते रहे। यह वचनामृत की बात है । भगवान का अनुसंधान चालू रखना है । इस लिये अपना सम्प्रदाय समैया उत्सव करता है । इसमें से बहुत कुछ सीखे है ।

मेरे अभिप्राय, विचारधारा के आधार पर कई हरिभक्त कईबार कहे है कि, हमारा पैर किस दिशा में जा रहा है । यह महत्व की बात है । हमारे जीवन की एक बड़ी जिम्मेदारी होती है कि अपना जीवन किस तरफ जा रहा है । हम लोगो के उपर भगवान के कारण एक लेबल है । यह तिलक किये है । यह कंठी पहने है । यदि कदम गलत जायेगा तो सम्प्रदाय का मान मर्दन होगा । यह महत्वपूर्ण वस्तु है । तो विचार करे अपना कदम किस दिशा में जाना चाहिए । या जा रहा है ? यह आप सभी की बात नही है । आप सभी लोग प्रातः एकादशी के दिन देव का दर्शन करने आये ही है । यह एक प्रतीकात्मक बात है ।

मान ले एक व्यक्ति को लोग एसी जगह पर देख ले तो उसे नही जाना चाहिए । अपने मे से ही हो । तो इसका प्रभाव आप पर नही पडेगा । यह सत्य है कि नही ? यह हम सब की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है । कहाँ पर खडे रहे । कहाँ पर बैठे । कैसे बैठे । यह सभी विवेक शिक्षापत्री में महाराज ने बताया है । कहाँ जाये, कहाँ पर नजर रखे, क्या सुने, क्या देखे । ये गंभीर बाते शिक्षापत्री भाष्य, वचनामृत सत्संगिजीवन आदि ग्रंथो में लिखा गया है । इस पदयात्रा से यह ज्ञात होता है । कि हमारी ईन्द्रियाँ किस दिशा में कार्यकर रही है ।

देव तक जाने के लिये बाहर से कोई जगह नही होती है । इतने संख्या में आप लोग दर्शन करने आये है । मुनि स्वामी तथा मैने तो दूरभाष नही किया था । फिर भी भाग्यवश आप सभी आये है । क्योकि ये देव है । दर्शन की प्रबल इच्छा रखने पर देव बल देते है । नही तो बिस्तर छोडना कठिन होता है । आप सभी हँसे आप लोगो को भी कष्ट हुआ है । आप सभी भाग्यशाली है जो यहाँ तक आये है ।

संतो के साथ इतिहास की बात कर रहा था । धनुर्मास मात्र अहमदाबाद देश में प्रचलित है । धनुर्मास धुन के लिये । शेष धनुर्मास पूरे जगत में रहता है । यु.पी. में इसे खरमास कहते है । कोई धनुष्यमास भी कहता है । लोग अलग–अलग नाम से बोलते है । कुच लोग कहते कै कि भगवान इस माह में पढने जाते है । पढना हमे है कि उन्हे ? वास्तविकता का हमे भी ज्ञान है । प्रथम फेरी निकलती थी । गलियो में मैं गया हूँ

धर्मजीवन स्वामी पीपूडी लेकर धुमते थे । हरिस्वरुप स्वामी । याद है । न ? गढ के संतो को याद होगा । पीपुडी पोर्टेबल होती है । बैटरी समाप्त होने पर दूसरी लगाते थे । घनश्याम महाराज की धुन की जाती थी । आज भी होती है । इसके बाद बडे महाराजश्री बैठना प्रारम्भ किये । जिससे धुन का हम लोगो को लाभ मिला । इसका कारण द्विशताब्दी महोत्सव की स्मृति करके बापजी की दया से मिलता है । यह अनादि काल से नही चला आ रहा है । लेकिन १९८१ के वर्ष में द्विशताब्दी महोत्सव मनाया तब से प्रारम्भ हो गया । पूर्ण रुप से हुआ । धीरे-धीरे बढता गया । आज अपने मंदिर में कही पर बैठने के लिये रिक्त स्थान नही रहता है । क्योकि आप लोगो की भगवान के प्रति निष्ठा है । आप सभी विना स्वार्थ के नरनारायणदेव के दर्शन के लिये आये है । छोटे-बच्चे-बच्चियाँ अधिक संख्या में आये थे । जिससे भविष्य के पीढी का संस्कार दृढ होगा । इसके लिये हमारा यह परिश्रम है ।

मुझे तो गाँवो में जाना होता है । इस लिये नियमित नही आ पाते है । आप सभी हरिभक्तो धन्यवाद के पात्र है । आप सभी मंगला से श्रृंगार तक धुन करते है । भगवान खुश होते है । दूसरा हम क्या बोले ? में हमेशा नही रहता हूँ इसलिये क्या कहूँ । अधिक बोल नही सकते है । सही बात है न । भगवान की कितनी कृपा है । आप लोग अवश्य विचार के । बीते दिन संत हमसे बोल रहे थे । ८ से ९ जगह पर शाकोत्सव है । मेरा जहाँ पर निवास स्थान है । वहाँ पर प्रतिदिन कम से कम आठ से दस निमंत्रण पत्र आता है । ३६५ दिन का कितना हो जाता है । यह करना है । नरनारायणदेव की कृपा है नही है ? कंकोत्रीया दूसरी कोई नही कह रहे है । यह अपने हरिभक्तो के समैया-कथा पारायण की बात है । ३६५ दिन में औसत १५०० कंकोत्री होती है । इतनी भजन होती है । हमे बावरा नही बनना है । पहले जैसा अब नही है । पहले भगवान को लोग हैरान करते थे । अब आप को कोई हैरान नही करता है ।

नरनारायणदेव तपस्या करके पुण्य हम सभी को देते है । इस लिये हम स्वाभिमानी बने है । यह खुशहाली इनके कारण से है । यह वास्तविकता है । सीधी बात है । देव के अलावा बात करना ही नही है । दूसरी बात मे जाना ही नही है । आप जायेगे भी नही ये हमारी सलाह है । नंद संत देव को देखकर कहे है । काहे भटक रहे है । हमे यह भगवान मिले है । कही पर जाने की आवश्यकता नही है । हमे अच्छे से समझ लेने की आवश्यकता है । सर्वप्रथम आरती को समझ लेने की आवश्यकता है । अडसठ तीरथ चरणे, कोटि गया काशी, धुमने फिरने कही जाना हो तो अलग बात है । यदि तीर्थ करने जा रहे है तो सभी तीर्थ देव के चरण में है । यही घर ही है । और दुनिया मे कही पर नही है । यह बात मे नाभि से कर रहा हूँ । भाषण करने के लिये नही कर रहा हूँ । भाषण आता ही नही है । घर के सामने भाषण क्या करना । कोई जानता नही है तो उसके सामने भाषण करना चाहिए ।

देव की जहाँ पर प्रधानता हो वह पर कदम रखना चाहिए । देव के सिवाय कही भी कदम यदि जाता है तो वह कदम गलत है । ठीक है वाकिंग का लाभ मिलेगा ।

अच्छा समय है । बहने नीचे तक कर रही है । बहनो का समुह बड़ा है । गादीवाला कभी बाहर से आयी रहती है तो मै कहता हूँ कि कल मत जाना । तो बोलती है छोटी छोटी बेटियाँ आती है । तो मै क्यो नही जाऊ ? ये लालजी महाराज साक्षी छे । इसके बाद हमे भी लगता है कि गादीवाला प्रतिदिन आये । बच्चे बच्चियाँ आते है इस लिये मै भी हाजर रहता हूँ । खुलकर बात करने मे कोई रुकावट नही है । भले ही अधिक जिम्मेदारी हो परिश्रम भी कईबार अधिक करना पडता है । लेकिन यह सब देव के आशीर्वाद एवम् संतो-भक्तो के प्रेम से कार्य होता है । आप सभी सूचित करने मात्र से सभी लोग प्रसंग पर आते है ।

राजन्मभूमि अपना गौरव है । और परम्परा भी है । प्रत्येक गाँव में बात किये है कि २२ तारीख को अपने प्रत्येक मंदिर में दिवाली, आसोपालव आदि प्राकृतिक वस्तुो से मंदिर को अलंकृत करना है । शेष २८ तारीख को बैगन उत्सव है । इसको बड़े रुप में बाद में मनाया जायेगा ।

देव का बन कर रहे । और रहते भी है । मन को ईघर-उधर मत ले जाये । वृद्ध लोग कहते है ऐसा नही करना चाहिए । लेकिनहम वृद्ध के समान उपदेश नही दे रहे है । भगवान के दरवाजे पर सिर रखे । सत्संग के भीड में रहने से अच्छा सुख मिलेगा । कही पर दुःख नही है । सभी हरिभक्तो का चेहरा देखे । कैसी चमक है । कोई दुःखी नही है । भगवान मिले, कितना आनंद है । शेष परिवार मे इसी तरह आनंद है । सभी एक बन कर रहे । और सुखी बने । ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में वंदना करते है ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री अभिषेक की सूची-जनवरी-२०२४

ता. ०२-०१-२०२४	प.भ.श्री निलकंठकुमार दिलीपभाई सोनी – मेमनगर।
ता. ०८-०१-२०२४	प.भ.श्री शालिनकुमार अरविंदभाई दोंगा – बापुनगर – ह. प.भ. अरविंदभाई दोंगा।
ता. ०९-०१-२०२४	प.भ.श्री भावेश सुरेशभाई सोनी – अहमदाबाद।
ता. १४-०१-२०२४	अ.नि. मालुभाई रामसंगभाई जादवना मोक्षार्थे, श्री करशनभाई मालुभाई जादव – ह. दिग्विजयसिंह तथा अतुलसिंह वेजलका, ता. धोलका।
ता. १५-०१-२०२४	अ.नि. शंकरभाई मगनभाई पटेल – हिरापुरा – ह. गं.स्व. मंजुलाबेन शंकरभाई पटेल।
ता. १६-०१-२०२४	प.भ.श्री भीखाभाई माधवलाल पटेल – करजीसणवाला हा. यु.एस.ए.।
ता. २५-०१-२०२४	प.भ.श्री विष्णुभाई परसोतमभाई पटेल – वडुवाला हा. कलोल।
ता. २६-०१-२०२४	प.भ.श्री रिंकलबेन निलेशभाई व्यास – लोस एन्जलस।
ता. २७-०१-२०२४	प.भ.श्री डाह्याभाई नारायणदास पटेल – माणसा।
ता. ३१-०१-२०२४	प.भ.श्री पारूलबेन मनीषभाई पटेल – राणीप।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-जनवरी-२०२४

रू।. १,००,०००/-	प.पू. मोटा महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. मोटा गादीवालाश्री – ह. आदर्श भक्तिभाई पटेल – उनावा।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૯૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

धर्मकुल के पधरामणी के लिये हरिभक्तो को महत्वपूर्ण सचन

सभी हरिभक्तो को अवगत किया जा रहा है कि अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की सत्संग के किसी स्थल पर पधरामणी की तारीख प्राप्त करने के लिये श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर प्रत्येक एकादशी, पूनम के दिन आये उसी दिन प्रसंग की तारीख कार्यक्रम के लिये साक्षात् मिलकर समय प्राप्त करे। उपरोक्त कार्य के लिये कोई भी पू. महाराजश्री के बंगले पर श्री स्वामिनारायण बाग पर नही जाना है। जिससे सभी लोग अवगत हो।

सम्पर्क : कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी – मो. : ९९०९९७६००९

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के पधरामणी के विषय में सूचन

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के पधरामणी की तारीख प्राप्त करने के लिये बहने कालुपुर मंदिर के हवेली में सांख्ययोगी बहनो से सम्पर्क करे। उपरोक्त कार्य के लिये कोई भी श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर नही जाये। जिस पर सभी बहने ध्यान दे।

સમગ્ર ધર્મકુળનાં સાંનિધ્યમાં
શ્રી નરનારાયણદેવ દેશનો સંયુક્ત

॥ શાકોત્સવ ॥

શાકોત્સવની દિવ્ય તસવીરો

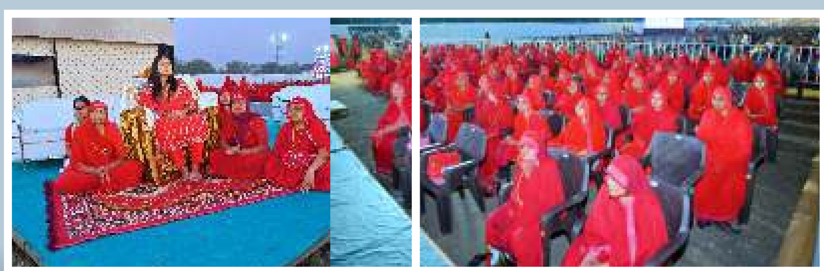

બાલવા ગામે વિશાળ સત્સંગ સમુદાય સમક્ષ શાકોત્સવ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

ઈશ્વરપુરા બદપુરા ગામે શાકોત્સવ કરતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

કુબડથલ ગામે શાકોત્સવ કરતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

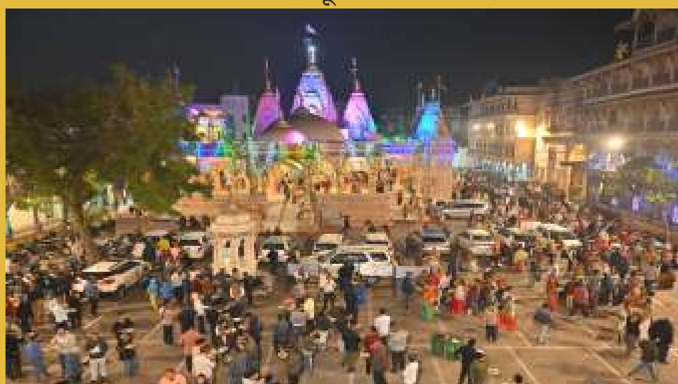

અમદાવાદ મંદિરમાં ધનુર્માસ દરમ્યાન શાકોત્સવ

નારણપુરા મંદિરમાં ધનુર્માસ દરમ્યાન શાકોત્સવ

ઝુલાસણ મંદિરમાં શાકોત્સવ

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा में (कालुपुर मंदिर हवेली)
"सच्ची शरणागति अर्थात स्वीकृति ।"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

शरणागति अर्थात् क्या ? मैं शरणागत हो गया ऐसा कहने पर शरणागत हो गये ? शरणागति का अर्थ क्या है ? तो शरणागति अर्थात् 'स्वीकृति' सच्चेमन से स्वीकृति ही सच्ची शरणागति कही जाती है। यदि हम शरणागति स्वीकार करते है तो हम भगवानके ुपर एहसान नही कर रहे है ? क्योकि ? शरणागति स्वयं के कल्याण के लिये होती है। शरणागति का सत्य अर्थ है कि जो मेरा जीवनहै । भगवान के चरणो में अर्पण करता हूँ। ऐसा मानना तथा विचार नही करना है। ऐसा स्वीकार करना पडता है।

सम्पूर्ण रुप से सत्य शरमागत ही उसे कैसे पहचान सकते है ? उसके स्वभाव से ज्ञात कर सकते है । सच्चे शरणागत का स्वभाव कैसा होता है। सच्चा शरणागत व्यक्ति दैवीय प्रकृतिवाला होता है । इस संसार में सतोगुण वाला कैसे पहचाने ? माया उसे बंधन में नही रख पाती है। जीव जब पूर्ण पुरुषोत्तम को आत्मसर्मपित कर देता है । तब उसे भौतिक प्रकृति परेशान नही करती है। वह जीव दैवी प्रकृति के नीचे आ जाता है। यह कैसे हो पाता है ? जीव में ऐसी शक्ति कैसे आथी है ? तो इसका कारण यह है कि हम भगवान के अंश ही है। इस लिये जीव जब परमात्मा के शरण में जाता है तब वह दैवीय प्रकृतिवाला बन जाता है। उदाहरण जब तक नदी सागर से नही मिलती है। तब तक वह नदी कही जाती है। जब सागर में विलीन हो जाती है। तो उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। वह सागर हो जाती है। इसी प्रकार अंश अपने अंशी से जब मिल जाता है। तब वह भगावनका हो जाता है। भगवान कोई नही बन सकता है । लेकिन जीव जब सत्य शरमागत हो जाता है तो वह भगावन में चित युक्त हो जाता है। तत्पश्चात सच्चे संत और् सतशास्त्रो के माध्यम के योग से आगे बढ जाता है । शरणगात होने क बाद जो स्वरुप (द्विभुज) सर्मपित हो जाता है । तो दूसरे रुप में मोह नही रखता है। अर्थात् वह अपने आराध्य के प्रति पूर्ण शरणागत हो चुका है । जिस स्वरुप की शरमागति ली है । उसके अलावा दूसरी जगह आसक्ति नही करता है। इस लिये इस संसार मे ''मोह'' कहाँ से आयेगा ? जो ऐसा सच्चा शरणागत होता है। वह सन्यासी योगी की तरह महान होता है। औह यर स्थिति ५ान से पाता है । सत्य शरणागति में सब कुछ आ जाता है। वही पर विषय बोग रुक जाता है। ईन्द्रियाँ दूसरे भोग से दूर हो जाती है। क्योकि सच्चा शरणगात सभी कार्य भगावन को खुश करने के लिये करता है । स्वयं के सुख की आश नही करता है। २४ घंटे वह यही सोचता है कि मै क्या करु मेरे भगवान खुश रहे । अर्थात् संसार सम्बधी विचार करने का अवसर ही नही मिलता है। ऐसे जीव संसार में रहकर मुक्त माने जाते है। सदेह तर जाते है ? उनके प्रारब्ध भी नष्ट हो जाते है। प्रत्येक जीव के संचित कर्म रोते ही है। शुभ कर्म करने पर देवलोक में प्राप्त करना है। अशुभ कर्म करने पर अधोगति को प्राप्त करता है। शुभ-अशुभ कर्म करने पर वह पृथ्वी पर आता है। यही संचित कर्म प्रारब्ध में बदल जाता है। ये प्रारब्ध के कर्म को भोगना ही पडता है। ये कर्म भगवान टाल देते है। जो इस जन्म में प्रारब्ध कर्म फल हमसे हो गया है । उसे प्रत्येक व्यक्ति को भोगना पडता है ।इसके बाद जन्म वाले प्रारब्ध समाप्त हो जाता है। हम जो इस देह में जो भोग रहे है। वर पूर्व निर्धारित होता है। अभी हम लोग नरनारायणधेव के चौक में बैठकर सत्संग कर रहे है। तो यह भी पूर्व निर्धारित था। एक एक विषय लिखा हुआ है । जो भी क्रिया होने वाली है । इस जीवन का अनुभव निश्चित है । लेकिन जो व्यक्ति अंदर से भगवान के लिये व्याकुल होता है। जो अंदर से भगवान के लिये सदन करता है । जिसे भगावनके अलावा कुछ भी नही चाहिए । तो भगवान उसका प्रारब्ध कर्म भगवान शीध्र पूरा कर देतेहै। उसे अधिक रास्ता नही देखना पडता है। आप के छोटे बच्चे-बच्चियाँ होते है। ये हाथ लम्बा करके रोते है। तो माता-पिता करतेहै। उसे नहलाते है। खाना खिलाते है। दूसरा भी कोई करना हो तो वह भूल जाता है। पहले उसे लाते है। शेष बाद में करेगे। ऐसा विचार करते है। क्योकि व्याकुल होकर रोता है। इसी प्रकार जीव व्याकुल होकर रोता है। शेष विचार कर उसका प्रारब्ध टाल देते है। इसके लिये बच्चे जैसे निखालस बनना पडता है। छोटा बच्चा अपने माँ के गोद में बैठकर शांत हो जाता है। ऐसी व्याकुलता होनी चाहिए। बालक को मा ध्यान देती है तो शांत ोह जाता है। ो मन शांत होता है।

ऐसा होने पर प्रारब्ध टल जाता है। शरणागति को दूसरा मुख्य लक्षण है कि भगवान की ईच्छा को मान देना । भगवान के ईच्छा के विपरीत नही जाना है। मालिक के खुशी मे खुश रहे। छोटे ब्वेकी तरह शरणागति स्वीकार कर लेना चाहिए। इसका अहंकार भी नही रखे कि अब तक महाराज की आज्ञा में रहे है। कितना साधन करके यह अवस्था प्राप्त किये है। मै का भाव आ जाने से सब कुछ किया बेकार हो जाता है। दया करके भगवान सद्‌बुद्धि प्रदान करे। मेरे से हुआ ऐसा भाव रखे। यदि अहंकार आ गया तो । सब भजन-पूजा बेकार है । समुद्र मै तैरती नाव कितनी मजबूत हो। लेकिन उसमें एक छेद हो जाने पर सब सबलता समाप्त हो जाती है । इसी प्रकार कितना साधन करके मजबूत हो जाये । अहंकार रुपी छेद से सब समाप्त हो जाता है। जीवनमें कितना बडा भी दुःख आये तो माँग दुःख से बार निकलने के लिये शक्ति दे । क्योकि यह अपना प्रारब्ध कर्म ही है। प्रारब्ध कर्म निश्चित होता है। इस लिये सहन शक्ति, धीरज रखे। भगवान का दिव्य प्रेम अवश्य मिलेगा । बगवान से मात्र प्रार्थना करे कि हम आप के शरणागत है। इसे स्वीकार कर लेना चाहिए।

श्री स्वामिनारायण मासिक नही मिले तो उसके विषय में

श्री स्वामिनारायण मासिक आप सभी सदस्यो को अवगत किया जा रहा है कि अपने श्री स्वामिनारायण मासिक पिछले कई वर्षो से नियमति रुप से प्रत्येक मास के ११ तारीख को पोस्ट किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र के लिये अंक को छाँटकर भेजा जाता है। फिर भी पोस्ट आफिस के ढिलास के कारण कई लोगो को अंक मिलता नही है। या समय से नही मिलता है। आप को प्रत्येक मास २० तारीख तक अंक नही मिलने पर आप अपनी नजदीक के पोस्ट आफिस मे पता करे । यदि नही मिलता है तो श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय के मोबाईल नंबर पर ९३१३७०६०९५ प्रातः ८ से ५ बजे तक ग्राहक नम्बर के साथ जानकारी दे। यदि अंक स्टाक में होगा तो आप पुनः भेजा जायेगा । २० तारीख तक प्रतिक्षा करके ही अपना ग्राहक नंबर बताये। २० तारीख से पूर्व टेलीफोन नही करे।

श्री स्वामिनारायण मंदरि, कालुपुर, अहमदाबाद में धार्मिक पूजा विधि के विषय में सूचना

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा अनुभवी विद्वान भूदेव द्वारा धार्मिक विधी जैसे पूजा, महापूजा, व्रत मनाना, गौ-पूजन, गौ-दान, सज्जादान (रसोई भरना) जैसे विधी की जाती है।

इसके बारे में सभी हरिभक्त भाई और बहन (भाईयो द्वारपा) कोठार आफिस में सम्पर्क करे । और उस पूजा-विधि का खर्च और अन्य सूचना आपिस से प्राप्त करे ।नाम पंजीकरण कराके रसीद प्राप्त करले।

कोई भी ब्राह्मण (भूदेव) के साथ निश्चित नही करे। पूजाविधि करने का आदेश कार्यालय में पंजीकृत होने के पश्चात ही किया जायेगा।

संपर्क : ८२३८००१६६६

ठाकुरजी का सोना-चाँदी के गहने और वस्त्रालंकार वस्त्र की सेवा देने वाले हरिभक्तो के महत्व पूर्ण सूचना

सभी हरिभक्तो को सूचित किया जाता है कि आप श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जो कोई भी हरिभक्त ठाकरुजी के लिये सोना-चाँदी के गहने और वस्त्रालंकार बनाकर भेट देते है। जिसका ज्ञान सभी को नही होता है। गहने इत्यादि ठाकुरजी को चडाने से पूर्व सर्व प्रथम अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के कोठार आफिस में पक्की रसीद बनवाये। इसके बाद पूजारी स्वामी को दिया जाता है। सभी हरिभक्त विशेष ध्यान दे।

दूसरा महत्वपूर्ण है कि ठाकुरजी के लिये कोई भी हरिभक्त यैरा वस्त्रालंकार नही लाये। जिस भी हरिभक्त को वस्त्रालंकार देने की ईच्छा हो वह श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर कोठार आफिस में सम्पर्क करे । अहमदाबाद मंदिर कोठार आफिस द्वारा सुंदर कपडे से भगवानके माप का बनवाया जाता है। आप अपने निश्चित धन राशिको कोठार आफिस में भर कर पक्की रसीद प्राप्त करले । इसलिये आप घर से वस्त्रालंकार बनाकर नही लाये । इस पर विशेष ध्यान दे।

सत्संग समाचार

एकादशी को खरमास में अहमदाबाद देश के तथा अन्य क्षेत्र के मंदिरो में हरिभक्तो की श्री नरनारायणदेव के दर्शन की पदयात्रा

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की परमकृपा से और भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के संकल्प प्रेरणा से खरमास में माघ वद-११ एकादशी ता. ७-१-२०२४ को श्री नरनारायणदेव देश के अहमदाबाद शहर और अन्य विस्तार के मंदिरो से हजारो की संख्या मैं हरिभक्त पदयात्रा द्वारा श्री नरनारायणदेव के दर्शन के लिये आये थे । सभी हरिभक्तो ने ठाकरुजी की आरती के बाद सुंदर इलायची केसर वाला दूध, फलहार, सुखडी चेवडा का प्रसाद अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा संत-मंडल ने कार्य पूर्ण किये । प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री सभी पदयात्रिको के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये थे । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदास)

अहमदाबाद मंदिर मं श्रीराम भगवान का अयोध्या में नवीन मंदिर प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में धून-भजन-संध्या आरती

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में ता. २२-१-२४ तथा शुभ दिन को शायं ५ से ७ मध्य कालुपुर मंदिर के प्रसादी वाले स्थल पर दीपक के द्वारा स्टेज बनाकर । अपने मंदिर के गवैया संत-पार्षद, पू. शा.स्वा. सुव्रत स्वामी, ब्र. स्वा. मुकुंदानंद, हजूरी पार्षद महादेव भगत तथा संगीत भजन की टीम भजन किये थे। पूरा चौक हरिभक्तो के भीड से भरा हुआ था । ५०० वर्षो की आतुरता के बाद मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भगवान अयोध्या में निज मंदिर में पधारे है । इस अवसर पर पूरे सम्प्रदाय हर्ष का अनुभव कर रहा है । इस समय अपने सबके गुरु धर्मवंशी परिवार इस कार्यक्रम में पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे। प.पू. बड़े महाराजश्री इस अवसर पर आशीर्वाद देते हुए । श्रीराम भगवान और श्री स्वामिनारायण भगावन की साम्यता एक दिन का प्रगटीकरण है। महाराज वचनामृत में धर्मकुल को अयोध्यावासी कहे है। इस तरह की सुंदर बात किये है । भगवान श्रीराम के महात्मय को समझाकर आशीर्वाद दिये थे । श्रीहरि के तीनो अपरस्वरुप की आरती उतारकर सभा में उपस्थित रहे सभी हरिभक्त संत उपस्थित होकर दीपक के द्वारा प्रज्वलित करके प्रतिष्ठा को मनाये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री के प्रतिनिधी स्वरुप में अयोध्या के प्रसंग का मानदेकर पू. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, पू. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर), पू. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी और मूली मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी हरिप्रकाशधासजी आदि संतो पू. महाराजश्री के प्रतिनिधि के रुप में आये थे । आज का सुंदर भव्य कार्यक्रम पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से पू. कोटारी नारायणुनि स्वामी और संत मंडल भव्य आयोजन किये थे । सभी को सुंदर प्रसाद का वितरण किया गया था ।(कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पौष मास की पूनम सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रत्येक पूनम के आखिरी ८ महिने से विद्वान संत के वक्तापद से सत्संग सभा में कथा-वार्ता पूर्ण की गयी । इस बार की पूनम सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में शा.स,वा. गोपालचरणदासजी (कलोल मंदिर) कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी भक्तो को आशीर्वाद दिये थे । पूनम दर्शन आनेवाले हजारो हरिभक्त को सुंदर पकवान, दाल, भात, रोटी, सब्जी, नमकीन आदि प्रसाद के रुप में भोजन दिया गया था । सभा का संचालन पू. शा. स्वा. मुनिस्वामीने किया था । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदास)

पूरे धर्मकुल के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव का संयुक्त शाकोत्सव मनाना

भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने भावि

आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के संकल्प एवम् प्रेरणा से ता. २८-१-२४ रविवार के दिन ''पर्व'' ग्राउन्ड जमीयतपुरा में पूरे धर्मकुल के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव देश के संयुक्त सर्व प्रथम भव्यातिभव्य महा अलौकिक शाकोत्सव १ लाख हरिभक्त के विशाल समुदाय और अनपे अहमदाबाद, भुज, मूली के पूजनीय संत की हाजिरी में पूर्ण हुआ । इस अवसर पर अपने गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमंत्रीश्री भूपेन्द्रभाई पटेल, अहमदाबाद, गांधीनगर के डे.मेयर श्री, श्री कौशिकभाई (धारासभ्य) आदि अनेक राजनीतिक क्षेत्र के विशे, लोग आये थे । प.पू. महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री मुख्य मंत्री को पुष्पहार और अपने मंदिर का प्रतिकृति द्वारा सुंदर आयोजन किया गया था ।

भुज मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. पुराणी स्वामी धर्मनंदनदासजी, पू. पार्षदवर्य जादवजी भगत, कोठारी स्वामी देवप्रकाशासजी आदि संत प.पू. लालजी महाराजश्री के आमंत्रण से पधारे थे ।

सुंदर खुले सामियाने में दोनो तरफ अपने अहमदाबाद, मूली और बुज मंदिर के पूज्य संत पधारे थे । मध्य में धर्मकुल पधारकर दर्शन दिये थे । अधिक संख्या में हरिभक्तो के मद्य प.पू. महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री तथा श्रीहरि प्रस्थापित अहमदाबाद, मूली, भुज, जेतलपुर और धोलका मंदिर के पूज्य महंत स्वामी और अपने माननीय श्री मुख्यमंत्री के साथ मिलकर शाकोत्सव का वघार किये थे । तथा मशाला डालकर तवेथा से चलाये थे ।लोया में जैसे भगवान के वस्त्र पीले हो गये थे । वैसे अपने महाराज के वस्त्र पीले हो गये थे । यहाँ पर प्रत्यक्ष श्री नरनारायणदेव साक्षात् है। इसका अनुभव एक लाख लोको को हुआ था ।

अपने सम्प्रदाय के सुप्रसिध्ध कथाकार पूज्य राम स्वामी सभा का संचालन सम्भाले थे । सर्व प्रथम मुख्यमंत्रीश्री अपने इस कार्यक्रम में आने के लिये सहमति दिये थे । भुज मंदिर के पू. महंत स्वामी पुराणी स्वामी धर्मनंदनदासजी आशीर्वाद दिये थे । इसके बाद कालुपुर मंदिर के पूज्य महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजीने सुंदर आशीर्वाद प्रवचन में प.पू. लालजी महाराजश्री के संकल्प से भव्य उतसव मनाया गया । यजमान हरिभक्त तथा बहनोने पूर्ण सहयोग दिये ते । ४३०० लोक स्वयं सेवक सेवा में तत्पर थे । एक महीने से सेवा देने वाले भाई-बहनो की प्रशंसा की गयी । बहनो की सभा में प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बडी गादीवालाश्री और पूज्य श्रीराज विराजमान थे । लाखो बहनोने दर्शन का सुख प्राप्त किया था । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. महाराजश्री सभी संतो लाखो भक्तो को आशीर्वाद दिये थे । ''पर्व'' के विशाल मैदान में नीचे कारपेट वाला भोजनालय में लाईव अडदिया, बाजरेकी रोटी, कढी, शाक, गुड, छाश आदि बोजन जैसे महाप्रसाद का एक लाख लोगोने भोग लगाया था । सभी लोग क्रमबद्ध प्रसाद ले रहे थे । अनुसाशन तथा वेविकपूर्ण व्यवस्था में भाग लिये थे । अपने श्री नरनारायणदेव देश और सम्प्रदाय की यह विशेषता है । अन्तिम रात को ८ से १० बजे के मध्य अपने सुप्रसिध्ध गायक कलाकार श्री पूरव पटेल और उनकी टीम ने रास गरबा गाये थे । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदास)

एक बच्चे द्वारा एकत्र किये बचत से शाकोत्सव में दान, तभी पू. महाराजश्रीने कहा अब शाकोत्सव पूर्ण हुआ

इस भव्य शाकोत्सव में एख बच्चा जिसका नाम रुद्र आशीषभाई भावसार जो सरसपुर अहमदाबाद में रहता है । बालक द्वारा एखत्र बचत रुपया ८०००/- (आठ हजार रुपये) शाकोत्सव के लिये अर्पण कर दिया । उसी प्रकार महारजा गढपुर में मंदिर बनवा रहे थे । उस समय एक विप्र अपने फटी पगडी में से एख रुपया महाराज को दिया था । महाराज बोले आप इस पैसे से नई पगडी ले लेना । विप्र ने कहा पगडी तो आ जायेगी । लेकिन मंदिर के सेवा का अवसर फिर नही आयेगा । तभी श्रीहरिने कहा कि अपना मंदिर अब पूर्ण हुआ । ऐसे प.पू. महाराजश्री बालवक की सेवा से कहे कि अब अपना शाकोत्सव परिपूर्ण हुआ ।

बालवा गाँव में कथा पारायण शाकोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पौष मास की पूनम सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री और प.पू. लालजी महाराजी के आज्ञा आशीर्वाद से तथा स.गु. पू. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से बालवा गाँव में ता. ८ से १२ जनवरी २०२४ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण प.भ. चौधरी रामाभाई मोतीभाई (मद्रासी) परिवारने यजमान पद से मप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. सगु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्तापद से पूर्ण की गयी । पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री औऱ बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने बहनो को दर्शन देकर आशीर्वाद दिये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा कथा की पूर्णाहुति की गई । पूरा गाँव तथा

आसपास के गाँव से हरिभक्त सभा मंडप में भर गये थे । पूर्णाहुति के दिन अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी संत मंडल ने प्रसंगोचित प्रवचन के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिये थे । यजमान परिवार के चौधरी महेन्द्रभाई रामाभाई, चौधरी नारायणभी रामाभाई, चौधरी बलदेवभाई रामाभाई और चौधरी भरतभाई रामाबाई आदिने अलौकिक लाभ उठाये थे । सभा का संचालन उनावा मंदिर के महंत देव स्वामीने किया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल प्रेरणारुप सेवा दिये थे ।(वसंतभाई एम. चौधरी)

श्री सहजानंद गुरुकुल प्रार्थना मंदिर कोटेश्वर का ७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा से तथा पू.स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के सुंदर मार्गदर्शन से श्री सहजानंद गुरुकुल प्रार्थनामंदरिक परिवार तथा पूरे पारीटादर समाज के कोटेश्वर के यजमानपद से ता. १६ से २० जनवरी २०२४ तक रात्रीय श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामीश्री सत्यसंकल्पदासजी के वक्तापद से पूर्ण हुए । कथा में आने वाले प्रसंगो पर श्रीहरि जन्मोत्सव आदि धामधुम से मनाया गया । ठाकुरजी के समक्ष महापूजा अन्नकूट आदि किया गया । सभा का संचालन कोठारी शा.स्वा. नारायणमुनिदासजीने शोभा बढाया था । (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

निकोल अहमदाबाद में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अमितकुमार प्रागजीभाई तलाविया परिवार द्वारा आयोजित ता. ९-१-२४ से १२-१-२४ तक श्रीमद् भागवत पारायण स.गु. शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल मंदिर के महंतश्री) के वक्ता पद से पूर्ण की गई । सुंदर भागवत कथामृत पान करके यजमान परिवार और श्रोता धन्य हुए । पूरे सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. व्रजभूषणदासजी (गांधीनगर से-२ महंतश्री) ने शोभा बढाया था ।(महंत स्वामी गांधीनगर से-२)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) में खमास ११ घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. महंत स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा तथा यहाँ के मंदिर के महंत शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी के सुंदर मार्दर्शन में ता. ७-१-२४ एकादशी को श्री स्वामिनारायण महामंत्र प्रागट्य दिन पर प.भ. अरविंदभाई दोंगा परिवार के यजमान पद से ११ घंटे अखंड महामंत्र धून की गयी थी । पूर्णाहुति के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी अन्य पूजनीय संतोने धुन की महिमा के साथ यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे । खरमास मे पूरे मास प्रातः दैनिक धुन तता १५ दिन तक धुन के यजमान बनकर हरिभक्तोने लाभ उठाया था ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

हर्षदकोलोनी (बापुनगर) मंदिर का शाकोत्सव- धनुर्मास की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से पू. महंत शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन से प.भ. दासभाई की देखरेख में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सहयोग से ता. १३-१-२०२४ के दिन यहाँ भव्य शाकोत्सव मनाया गया । धुन तथा सत्संग सभा की गयी थी । संत मंडल का प्रासंगीक प्रवचन के बाद पू. महंत स्वामी शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर(सभी हरिभक्तो के प्रेरणा स्वरुप आशीर्वाद दिये थे । पूरे खरमास में धुन गायी गई थी । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

गोमतीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में खरमास धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से गोमतीपुर श्री स्वामिनारायणमंदिर में खरमास में सभी हरिभक्त मिलकर पूरे मास श्री स्वामिनारयण महामंत्र धुन किये थे । (कोठारी मुकेशभाई)

देलमाल गाँव में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से देलमाल गाँव में ४-१-२४ के दिन मेहसाणा मंदिर के महंत स.गु.स्वा. नारायणप्रसाददासजी संत मंडल के साथ पधारे थे । कथा-वार्ता धुन करके हरिभक्तो को प्रसन्नचित किये थे । संतो के प्रयास से हरिभक्त भाव विभोर बने थे ।(कोठारीश्री देलमाल)

घिणोज गाँव में सत्संग सभा - शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से मेहसाणा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. नारायणप्रसाददासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर घिणोज में सुंदर सत्संग सभा और शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । इस अवसर पर जेतलपुर मंदिर से पू.स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी संत-मंडल के साथ पधारकर कथा वार्ता का सुंदर लाभ दिये थे । (कोठारीश्री जसवंतभाई दवे)

मेहसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य शाकोत्सव - सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा ३१-१२-२३ रविवार के दिन यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था ।इस अवसर पर जेतलपुर धाम से पू. स.गु. शा.स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी पधारकर कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । मेहसाणा, करसनपुरा, मोटप, खेरवा, चाणस्मा आदि गाँवो से पांच हजार जितने हरिभक्त कथा-वार्ता का लाभ लेकर शाकोत्सव में भाग लिये थे । पूरे अवसर पर मंदिर के महंत स्वामी स.गु. नारायणप्रसाददासजी और मेहसाणा सत्संग समाज ने सुंदर प्रबन्ध किये थे । शाकोत्सव के यजमान प.भ.श्री जी.करे. पटेल परिवार था ।(कालुपुर मंदिर के ट्रस्टी) ।(कोठारी हितेन्द्रसिंह राओल - मेहसाणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट शाकोत्सव मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से ट्रेन्ट गाँव में श्री स्वामिनारायणमंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । शाकोत्सव का आयोजन पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पूज्य स्वामी श्यामचरमदासजी, ब्र.स्वा. हरिस्वपानंदजी (कांकरिया), महंत शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदाजी (बावला) आदि संत मंडल पदारकर कथा-वार्ता करके शाकोत्सव का वघार करके हरिभक्तो को सुंदर लाभ दिये । (कोठारीश्री जगदीशभाई मणीलाल पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बामणवा में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से बामणवा गांव में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, ब्र.स्वा. हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टी कालुपुर मंदिर), स्वामी भक्तिचरणदासजी संत मंडल कथा वार्ता करके शाकोत्सव का वघार किये थे । शाकोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. सुरेशभाई मूलजीभाई पटेल परिवार बना था । (दिनेशभाई मूलजीभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डेडियासण शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से डेडियासण श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.भ. भीखाभाई दानाभाई मोरी तथा प.भ. देवाभाई भीखाभाई के यजमान पद से सुंदर शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, ब्र.स्वा. हरिस्वरुपानंदजी, नंदकिशोर स्वामी, स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी और स्वामी भक्तिचरणदासजी आदि संत शाक वघारकर कथा वार्ता का लाभ दिये थे । हरिभक्त खुश हुए । (महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदाजी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद यहाँ कालीयाणा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) और स्वामी भक्तिचरणदासजी आदि संत मंडल ने गाँव के सभी हरिभक्तो को कथा-वार्ता-धुन कीर्तन करके सुंदर शाकोत्सव मनाये थे । जिस में गाँव के छोटे-बड़े प्रत्येक हरिभक्तने लाभ उठाया था ।(महंत स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम), ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टीश्री कालुपुर), अखंड स्वामी (नारणपुरा), भक्तिचरण स्वामी (गढडा), महंत स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी (बावला), स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (मथुरा महंतश्री) आदि संत मंडल यहाँ के मंदिर में भव्य शाकोत्सव करके कथा वार्ता का सुंदर लाभ दिये थे । पाटडी से सां.शांताबा, हंसाबा, रंजनबा आदि सांख्ययोगी बहनोने

हरिभक्त बहनो को कथा-वार्ता का लाभ दी थी ।(मुकेशभाई भगवानदास पटेल)

बालासिनोर गाँव में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर में संत-हरिभक्त मिलकर भव्य शाकोत्सव किये थे । जेतलपुरधाम से पू. महंत के.पी. स्वामी, नारायणपुरा मंदिर से महंतश्री विश्वप्रकाशदासजी, ब्र.स्वा. हरिस्वरुपानंदजीने कथा-वार्ता सुनाकर हरिभक्तो को खुश किये । स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी - जेतलपुर महंतश्री)

ईश्वरपुरा गाँव में (बदपुरा) श्रीमद् भागवत पारायण शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ईश्वरपुरा (बदपुरा) गाँव में अ.सौ. रमीलाबेन गोविंदभाई वेलाभाई चौधरी परिवार यजमान पद से अ.नि. हीराबा बेलाभाई चौधरी, अ.नि. वेलाभाई कानाभाई चौधरी की स्मृति में ता. २-१-२०२४ से ता. ६-१-२४ तक सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध वक्ता कथाकार पूज्य .गु. शास्त्री स्वामीश्री राकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से श्रीमद् भागवत पारायण और भव्य शाकोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया ।

पूरा गाँव तथा आस-पास गाँव के धर्मप्रेमी लोग श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण करके धन्य धन्य हुए ।

ता. ६-१-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे तब पूरा गाँव स्वागत और समैया किये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यहाँ के निज मंदिर में आरती, दर्शन करके सभा में पधारकर कथा की पूर्णाहुति आरती उतारे थे । इसके बाद शाकोत्सव का वघार करके सभा में पधारे थे ।

प्रसंगोचित सभा में कालुपुर मंदिर में पू. महंत स.गु.तशास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी यजमान परिवार तथा गाँव के सभी हरिभक्त देव में निष्ठा बने ऐसा प्रेरक वचन कहे थे । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने यजमान परिवार तथा पूरे गाँव को आशीर्वाद खुश होकर दिये । धामो-धाम से संत पधारे थे । पूरे प्रसंग का संचालन उनवा मंदिर के महंत देव स्वामीने सम्भाला था ।(कोठारीश्री ईश्वरपुरा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगधा (बहनोका) शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा प.पू.असौ. गादीवालाश्री के प्रेरणा-आशीर्वाद से धांगधा में श्री नरनारायणदेव के अधीन बहनो का श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ११-१-२४ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया । इस मंदिर में सेवा पूजा करते सां. कंचनबा आदि बहनोने सुंदर व्यवस्था की थी । मंदिर के ५ वे पाटोत्सव के अवसर पर ५०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गई थी । आस-पास के १० गाँव की बहनोने लाभ उठाया । (अनिलभाई दूधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर में शाकोत्सव

पूर्ण पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से वांकानेर स्वामिनारायण मंदिर में भव्य शाकोत्सव का आयोजन ता. ६-१-२०२४ के दिन किया गया था । जिसके यजमान पद पर प.भ. किरीटसिंह नटवरसिंह जाडेजा साहब के परिवार ने लाभ लिया था । इस अवसर पर हरिभक्तोने धुन कीर्तन किये थे । शास्त्री स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी शाकोत्सव की महिमा बताये थे । कि लोया में शाकोत्सव के समय स्वामिनारायण भगवानने राधाकृष्णदेव मूर्ति की अभिषेक पूजन आरती किये थे । वही प्रसादी की मूर्ति अपने मूली मंदिर के मध्य खंड में विराजित होकर दर्शन देती है । इस मूर्ति के दर्शन का लाभ हम सभी को मिलता है । इस अवसर पर युक्त सत्संगियोने अच्छी सेवा दी है । (जे.के. स्वामी - वांकानेर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लीलापुर (चंद्रगढ) मूर्ति प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से मूली प्रदेश के लीलापुर (चन्द्रगढ) गाँव में नवीन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव उल्लास पूर्वक मनायी गई । इस अवसर के उपलक्ष्य में ता. १४-१-२४ से ता. १८-१-२०२४ तक पू. अ.नि. स.गु. स्वामीश्री विज्ञानदासजीने संत मंडल सहित पाँच दिनात्मक कथा पारायण करके हरिबक्तो को लाभ दिये । ता. १८-१-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उनके करकमलो द्वारा नये मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण की गई । बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे । कई बहनो को गुरु मंत्र भी दी थी । पूरे गांव के उपर खुश होकर प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किये थे । (अनिल दूधरेजिया)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

मागसर सुद-१ प.भ. कुरजी लालजी राबडीया (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. चौधरी जयंतीभाई बाबुभाई (बापुपुरा) । **मागसर सुद-२** प.भ. डॉ. टविंकलबेन शैलेषभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. मनहरभाई माधाभाई कथीरीया (बापुनगर), प.भ. घनश्यामभाई दलसुखभाई पटेल (करजीसण) । **मागसर सुद-३** प.भ. अल्पेशभाई मनुभाई पटेल (मुबारकपुरा) । **मागसर सुद-४** प.भ. डाह्याभाई मगनदास पटेल (आंबलीयासण), प.भ. मितेन अशोकभाई पटेल (निकोल), प.भ. निष्का जीनल पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर सुद-५** श्री स्वामिनारायण मंदिर (उमरेठ), प.भ. कमलेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भीखाभाई पोपटभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. उत्सव रमेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. तेजेसभाई चंदुभाई वोरा (अहमदाबाद), प.भ. धर्मेन्द्रभाई सवजीभाई ठोरीया (अहमदाबाद), प.भ. जीतेन्द्रभाई मनजीभाई वेकरीया (बलदीया-कच्छ) । **मागसर सुद-६** प.भ. वेलाजी बापुजी चौधरी (बालवा), प.भ. गजेन्द्र जगदीशभाई पटेल (माणेकपुर) । **मागसर सुद-७** प.भ. मोहनलाल जादवजी छभाडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. चिनुभाई रामजीभाई चौधरी (माणेकपुर) । **मागसर सुद-८** अ.नि. धनबाई धनजी हरसीयाणी (केरा-कच्छ) । **मागसर सुद-९** प.भ. योगेशभाई विठ्ठलभाई पटेल (वडोदरा), प.भ. गीरीशभाई परसोतमभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. हिरलबेन अमरकुमार पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर सुद-१०** प.भ. जगदीशभाई पूनमचंद पटेल (देउसणा), प.भ. हितेशभाई रतीलालभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनीषभाई हिंमतभाई लक्कड (थलतेज) । **मागसर सुद-११** प.भ. दिव्येश गोविंदभाई भंडेरी सह परिवार (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. नरेशभाई वाडीभाई ठक्कर (अहमदाबाद) । **मागसर सुद-१२/१३** प.भ. अरविंदभाई रमणलाल पटेल (रनेला), प.भ. डॉ. सतीष शाह (अमेरिका), प.भ. हरेशभाई भीखाभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. उदयकुमार कानजीभाई टांक (अहमदाबाद), प.भ. हिरेनभाई मुकुन्दभाई पटेल (धनसुरा), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. नगीनदास राणा, प.भ. आनंदीबेन त्रिभोवनदास पटेल (आजोल), प.भ. हिंमतभाई वशरामभाई लक्कड (थलतेज), अ.नि. विजयकुमार अमृतलाल पटेल (कोठा), प.भ. खुशीबेन प्रबोधभाई बावलीया (अहमदाबाद), प.भ. अरूणभाई जमनादास लखतरीया (अहमदाबाद), प.भ. विनोद खीमजी गाजपरीया (बलदीया-कच्छ) । **मागसर सुद-१४** श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (घनश्यामनगर), प.भ. भरतभाई विठ्ठलभाई (अंबापुर), प.भ. पृथ्वी भूपेन्द्रभाई हिरजी भूडिया (कच्छ) । **मागसर सुद-१५** अ.नि. शांताबेन नागजीभाई टांक (मुंबई), प.भ. गोमतीबेन गोपालभाई पटेल (अमेरिका).

मागसर वद-१ अ.नि. नानजीभाई रामजीभाई गोगारी (उमरेठ), प.पू.सद्. पुराणी स्वामी भक्तिप्रकाशदासजी (मेमनगर गुरुकुल), अ.नि. शांताबेन मोहनलाल पटेल (उंझा), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर) । **मागसर वद-२** प.भ. जयेशभाई हेमचंदभाई सोनी (अहमदाबाद), अ.नि. सिल्की बिन्देश पटेल (गांधीनगर) । **मागसर वद-३** निरामय आंखनी होस्पिटल (अहमदाबाद), अ.नि. राधाबेन रवजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ) । **मागसर वद-४** प.भ. रविभाई शिवजी हालाई (दहींसरा-कच्छ), प.भ. योगेशकुमार रावजीभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. नाथीबेन मंगलभाई पटेल (अंबापुर), प.भ. हरिलाल कल्याण कानजी (दहींसरा-कच्छ), अ.नि. कुमुदबेन कांतिलाल दाणी (अहमदाबाद), प.भ. अमिताबेन कांतिलाल पटेल (बोपल), प.भ. वालीबेन वालजीभाई परमार (रतनपर), श्री स्वामिनारायण मंदिर (राणीप), प.भ. शारदाबेन चिमनभाई पटेल (मुबारपुर), प.भ. दानाभाई कोयाभाई पटेल (मोटा धरोडा), प.भ. चौधरी रमेशभाई मसोतभाई (मकाखाड), प.भ. शशीकान्त शंकरलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मोहन कानजी वरसाणी (कच्छ), अ.नि. विठ्ठलभाई कानजीभाई वसोया (बापुनगर) । **मागसर वद-५** प.भ. गौरव पटेल परिवार (वडोदरा), प.भ. भावेश, पारूल, जान्वी वसंतभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. शांताबेन जयंतिलाल पटेल (उंझा), अ.नि. विदुलाबेन महेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर वद-६** प.भ. दिनेशभाई पी. मारू (राजकोट), प.भ. नानजी रत्ना राबडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. धीरजभाई (ईटारवा) । **मागसर वद-७** अ.नि. मनजी हरजी रामजी पिंडोरीया (मिरजापर-कच्छ) । **मागसर वद-८** प.भ. हरजी प्रेमजी पिंडोरीया (गोधरा-कच्छ), प.भ. परसोतमभाई मोहनभाई पटेल (लालोडा) । **मागसर वद-९** प.भ. कांता शामजी (गोधरा-मांडवी-कच्छ), प.भ. घनश्यामकुमार मुलचंददास (डांगरवा), अ.नि. विजकोरबेन भूखणदास (सुरत), प.भ. राकेशभाई गोविंदभाई पटेल (वडुवाला), समस्त सत्संगी बहेनो (अडालज), प.भ. जल दिलीपकुमार पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर वद-१०** अ.नि. प्रहलादभाई पूंजलदास (डांगरवा), अ.नि. शकरीबेन परसोतमदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. धनबाई लालजी प्रेमजी वेकरीया (रामपर-कच्छ), प.भ. अरविंदभाई रणछोडभाई पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर वद-११** प.भ. घनश्यामभाई नारायणदास पूंजलदास (करजीसण), देवकृपा परिवार (अहमदाबाद), प.भ. सुरेशभाई अंबालालभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. मनीष नानदासभाई वरसाणी (माधापर-कच्छ) । **मागसर वद-१२** अ.नि. अर्जुनसिंह बदेसिंह झाला (अडवाल), अ.नि. राधाबेन रवजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. सुमिताबेन दिलीपभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हरिभाई चतुरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रमीलाबेन अशोकभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. जनकभाई पटेल (थलतेज-अहमदाबाद), प.भ. शैलेषभाई भीखाभाई भावसार (सरसपुर), अ.नि. महेशभाई भीखाभाई पटेल (झुंडाल), अ.नि. उजीबेन कालुभाई नाकराणी (हजीराधार), प.भ. रोनक रमेशभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. रूखीबेन परसोतमभाई पटेल (मासीवाडा) । **मागसर वद-१३** प.भ. घनश्यामभाई ठक्कर (गांधीधाम-कच्छ), प.भ. हिंमतभाई पटेल (पलसाणा), प.भ. ऋतुबेन प्रफुलभाई काछडीया (अहमदाबाद) । **मागसर वद-१४** प.भ. हरेशभाई जयंतिलाल पटेल (वडु) । **मागसर वद-३०** अ.नि. अरूणाबेन चंद्रकान्तभाई गांधी (वडोदरा), अ.नि. दयाबेन भगवानदास देपाला (अहमदाबाद), प.भ. नानजीभाई विसरामभाई गोरसीया (सुखपर-कच्छ).

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

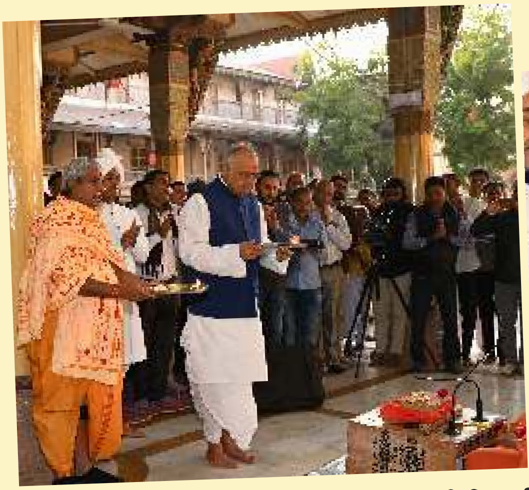

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में पूनम की नियमति सभा में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो का दर्शन ।

मानसर (मूली प्रदेश) गाँव में नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते तथा सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटेश्वर गुरुकल (अहमदाबाद) के ७वें पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन ।

सास्काटन (कैनेडा) मंदिर में सत्संग सभा ।

वानकुंवर (कैनेडा) मंदिर में शाकोत्सव तथा समूह महापूजा ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 “ Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 24-02-2024

श्री नरनारायणदेव के समक्ष समस्त सत्संगी की तरफ से
अयोध्या श्रीराम मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका
स्वीकार करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

खरमास में
अहमदाबाद शहर
के सभी क्षेत्रो मे
से अधिक
संख्या में हरिभक्त
पदयात्रा
करके कालुपुर मंदिर
आये तब
प.पू. आचार्य
महाराजश्री का
आशीर्वाद और प्रसाद
दोनो प्राप्त हुआ ।